<u>भारतीय इतिहास में प्रजातंत्र/ लोकतंत्र के बीज :</u>

लोकतंत्र में लोक का अर्थ जनता और तंत्र का अर्थ व्यवस्था से है। अत: लोकतंत्र का अर्थ हुआ जनता का राज्य। लोकतंत्र की सबसे निचली इकाई पंचायत है। पाँच व्यक्तियों की सभा एवं पंचायत हमारा बहुत प्राचीन और सुन्दर शब्द है, जिसके साथ प्राचीनता कि मिठास जुड़ी हुयी है। पाँचों पंच जब एक साथ कोई निर्णय देते थे तो यह परमेश्वर की आवाज मानी जाती थी।

प्राचीन काल से ही भारत में पंचायतों को बहुत शक्तियाँ प्राप्त थी।यदि हम भारतीय इतिहास में "प्रजातंत्र के बीज" देखना चाहें तो हमें इसके बीज ऋग्वेद में प्राप्त होते हैं। वैदिककाल में ग्राम से लेकर पूरे राष्ट्र की शासन व्यवस्था पंचायत पर चलती थी।

भारत में वैदिक काल से ही ग्राम सभाओं अर्थात् ग्राम पंचायतें बन चुकी थीं । वेदों को पढ़ने से ये पता चलता है कि उस समय हर गाँव आर्थिक, सामाजिक व राजनैतिक दृष्टि से आत्मनिर्भर इकाई होता था। राजा को इसमें हस्तक्षेप का अधिकार नहीं होता था।राजा, मंत्री और विद्वानों से विचार विमर्श करने के बाद ही कोई फैसला लेता था.

पंचायत हमारी राष्ट्रीय एकता तथा लोकतंत्र का रक्षा कवच है। इस तरह हम देखते हैं कि पुराने समय से पंचायत भारत में "प्रजातंत्र के बीज" के रूप में रही है। ऐसा कहना गलत नहीं होगा की लोकतंत्र का सिद्धांत वेदों की ही देन हैं.